देवकी उर्फ काला

बनाम

हरियाणा राज्य

24 जुलाई, 1979

[वी. आर. कृष्णा अय्यर, डी. ए. देसाई और ए. डी. कौशल, जे.जे.]

सजा देने की प्रक्रिया-समाज विरोधी विशेषज्ञ अपराधी को रिहा करने के आदेश के लिए याचिका अपराधी परिवीक्षा अधिनियम, 1958 (1958 का अधिनियम XX) के तहत परिवीक्षा पर जेल सुधारात्मक कानून का व्यर्थ अपमान है।

याचिकाकर्ता को धारा 366 और 368 के तहत दोषी ठहराया गया और सजा सुनाई गई दंड संहिता के तहत अपराधों के लिए प्रत्येक मामले में तीन साल के कठोर कारावास की सजा लड़कियों का अपहरण, प्रलोभन और दूसरों को बेचना। अपील में, उच्च न्यायालय ने धारा 366 आई. पी. सी. के तहत दोषसिद्धि के उक्त आदेश की पुष्टि की, लेकिन धारा 368 आई.बी.आई.डी. के तहत दोषसिद्धि को रद्द कर दिया।

विशेष अनुमति याचिका खारिज करते हुए अदालत ने अभिनिर्धारित किया:

यह सुधारात्मक कानून का निरर्थक अपमान है। ऐसे समाज-विरोधी विशेषज्ञ अपराधियों के लिए अपने विचारशील प्रावधानों का विस्तार करने के लिए अपराधी परिवीक्षा अधिनियम, जैसे कि इस मामले में, जहां याचिकाकर्ता एक घृणित अपराधी है लड़कियों के अपहरण प्रलोभन और बिक्री की कला में पर्याप्त विशेषज्ञता के साथ, एक टैक्सी कैब में उतरा, युवती का अपहरण कर लिया और जब वह चिल्लाई उसे वह औषधि पिलाई जिसने उसे बेहोश कर दिया और एक सुनियोजित योजना से उसे बिहार के छोटे से शहर से धनबाद ले गई और वहाँ से, दिल्ली से हरियाणा गया और उसे अनैतिक उद्देश्यों के लिए एक घर में रखा। [82 सी-ई]

आपराधिक अपीलीय क्षेत्राधिकार: अपील की विशेष अनुमति के लिए याचिका (आपराधिक) संख्या 1839/1979।

आपराधिक अपील संख्या 329/75 में पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के निर्णय और आदेश दिनांक 19-1-1973 से विशेष अनुमति द्वारा अपील।

याचिकाकर्ता की ओर से जे. पी. गोयल और एस. के. जैन।

न्यायालय का आदेश कृष्णा अय्यर, जे. पार्वती द्वारा दिया गया।

17 साल की एक नाबालिग लड़की सूर्यास्त के समय बिहार के कलाविहीन शहर सीतलपुर में एक सार्वजनिक सड़क के किनारे अपने घर जा रही थी। जब हमारे सामने याचिकाकर्ता श्रीमती देवकी ने शैतानी इरादे

से झपट्टा मारा और उसे एक टैक्सी-कैब में बैठा लिया और भाग गया। रोती हुई पीड़िता को बेहोशी की दवा दी गई, धनबाद ले जाया गया और फिर आगे गंतव्य हरियाणा ले जाया गया। दुख की बात है कि जहां पर्यटक प्रचुर मात्रा में आते हैं, वहां महिला शरीर में उपग्रह उद्योग फलते-फूलते हैं, जब तक कि राज्य इस भयानक बुराई को खत्म करने के लिए उग्र उत्साह के साथ अभियान नहीं चलाता। खैर, पार्वती, जो अब तक एक गाँव के विला में गुलाम थी, को संपन्न कामुक युवाओं को वैवाहिक बिक्री के लिए पेश किया गया था। संकट में फंसी युवती आधे खुले दरवाजे से भाग निकली और अंततः पुलिस स्टेशन पहुंच गई। पुलिस जांच में दयनीय कहानी सामने आई और यह एक मामले, दोषसिद्धि, अपील, पुष्टि और अंत में, इस अदालत में विशेष अनुमति याचिका के रूप में समाप्त हुआ, जो हर पराजित वादी की अंतिम शरणस्थली है।

अपराध के समवर्ती निष्कर्षों का सामना करते हुए, याचिकाकर्ता के अधिवक्ता ने दोषसिद्धि पर अपना विरोध छोड़ दिया और अपना ध्यान केंद्रित किया सज़ा पर, जो, इस मामले में, तीन साल का कठोर कारावास था। किस लिए? एक किशोर लड़की का अपहरण करने और व्यावसायिक उद्देश्य से उसे यौन संबंध बनाने के लिए मजबूर करने के लिए, एक रैकेट जो कमजोर लिंग के लिए संवैधानिक चिंता के बावजूद, एक बड़ा राष्ट्रीय खतरा बन गया है। अधिवक्ता ने आग्रह करने का साहस किया कि अपराधी

परिवीक्षा अधिनियम को इस घृणित अपराधी तक बढ़ाया जाना चाहिए जिसने लड़कियों के अपहरण, प्रलोभन और आकर्षक कीमत की पेशकश करने वालों को बेचने की कला में पर्याप्त विशेषज्ञता दिखाई है।

इस मामले की विशेषताओं से पता चलता है कि याचिकाकर्ता अचानक एक टैक्सी-कैब में उतरा और युवती का अपहरण कर लिया, और जब वह चिल्लाई, तो उसे नशीला पदार्थ पिलाया जिससे वह बेहोश हो गई। इसके अलावा, जब हम अपराध के भौगोलिक विस्तार को देखते हैं तो एक अच्छी तरह से बनाई गई योजना समझ में आती है। बिहार के एक छोटे से शहर से लड़की को धनबाद भेजा जाता है और वहां से दिल्ली होते हुए हरियाणा भेजा जाता है, एक घर में रखा जाता है जहां युवकों को स्पष्ट अनैतिक उद्देश्यों के लिए उसे देखने के लिए कहा गया। यह ऐसे असामाजिक, विशेषज्ञ अपराधियों के लिए अपने विचारशील प्रावधानों का विस्तार करने के लिए अपराधी परिवीक्षा अधिनियम जैसे सुधारात्मक कानून का व्यर्थ अपमान है। हम बस इतना कर सकते हैं कि इस याचिका को आक्रोश के साथ खारिज कर दें और इसके बाद बिहार और हरियाणा की राज्य सरकारों से अपील करें कि वे एक विशेष दस्ता लगाएं और ऐसे हर अपराधी का पीछा करें ताकि हमारे कस्बों की सड़कों और भारतीय नारीत्व के लिए सूर्यास्त के बाद शहरों को स्वच्छ और सुरक्षित बनाया जा सके।

एस.आर. अपील खारिज की जाती है।

[यह अनुवाद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल **'सुवास'** की सहायता से **अनुवादक, राहुल कुमार** द्वारा किया गया है।**]**

अस्वीकरण : यह निर्णय पक्षकार को उसकी भाषा में समझाने के सीमित उपयोग के लिए स्थानीय भाषा में अनुवादित किया गया है और किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग नहीं किया जा सकता है। सभी व्यावहारिक और आधिकारिक उद्देश्यों के लिए, निर्णय का अंग्रेजी संस्करण प्रामाणिक होगा और निष्पादन और कार्यान्वयन के उद्देश्य से भी अंग्रेजी संस्करण ही मान्य होगा।